RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-05
May-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

भारत द्वारा चीनी के निर्यात का एक आलोचनात्मक विश्लेषण (वर्ष 2000 के पश्चात)

दुर्गेश कुमार

शोध छात्र अर्थशास्त्र विभाग (नेहरू ग्राम भारती डीम्ड विश्वविद्यालय कोटवा जमुनीपुर प्रयागराज)

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 15 May 2019

Keywords
चेनी, उद्योग, रोजगार, परिवहन, चीनी

ABSTRACT

चीनी उद्योग ग्रामीण भारत का कृषि आधारित एक महत्वपूर्ण उद्योग है। भारत में चीनी उद्योग ग्रामीण संसाधनों को जुटाकर रोजगार एवं उच्चतर आय परिवहन व संचार सुविधाओं के सृजन द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक आर्थिक विकास का केन्द्र बिन्दु रहा है। चीनी वैश्विक स्तर पर उत्पादित व उपभोग की जाने वाली एक महत्वपूर्ण वस्तु है। वैश्विक स्तर पर 123 देशों से अधिक देशों में इसका उत्पादन किया जाता है जिसमें कुल उत्पादन का 70 प्रतिशत घरेलू उपभोग के रूप में प्रयोग में लाया जाता है और शेष बची हुई चीनी का अन्तर्राष्ट्रीय रूप से व्यापार किया जाता है। भारत विश्व में ब्राजील के बाद चीनी का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक देश है तथा सबसे बड़ा उपभोक्ता देश भी है। (Source: United States Department of Agriculture foreign Agriculture Service) चीनी का उत्पादन गन्ने द्वारा होता है। भारत द्वारा विश्व के कुल चीनी का 16 प्रतिशत उत्पादित किया जाता है।

प्रस्तावना–

कृषि प्राचीन समय से ही मानव के जीवन यापन का प्रमुख आधार रही है। प्राकृतिक और भौगोलिक विविधताओं के पश्चात् भी हमारा देश भारत एक कृषि प्रधान देश रहा है और वर्तमान में भी देश की लगभग दो तिहाई जनसंख्या प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से कृषि पर आश्रित है। ऐतिहासिक परिपेक्ष में यह पाया गया कि 1980 के दशक के अन्त तक भारतीय कृषि से सम्बन्धित निर्यात कुछ व्यावसायिक फसलों जैसे चीनी, चाय, कॉफी मसाले आदि तक सीमित थे और कृषि सम्बन्धी आयात अधिकांशतः प्रतिबंधित थे। परन्तु इसके बाद की अवधि में कृषिगत उत्पादों के निर्यातों की मात्रा में वृद्धि हुई और साथ ही साथ वस्तुओं के आयातों में लगे प्रतिबन्ध भी हटाए गए कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की हमेशा से रीढ़ रही है। इस कृषि क्षेत्र द्वारा कुल कार्यशील जनसंख्या के 48.9 प्रतिशत (2011 की जनगणना के आधार पर) लोगों को प्रत्यक्ष रूप से रोजगार प्रदान किया गया। (आर्थिक समीक्षा 2018–19)

किसी देश की अर्थव्यवस्था में कृषि क्षेत्र, आर्थिक विकास की प्रक्रिया में एक रणनीतिक भूमिका निभाता है। विश्व के प्रत्येक का आर्थिक ढांचा उस देश विशेष के प्रकृति प्रदत्त संसाधनों, उनके दोहन, वहाँ की सामाजिक, राजनैतिक परिस्थितियों आदि से प्रभावित होता है। खासकर ऐसी स्थितियाँ उन अल्प विकसित राष्ट्रों की जिनकी अर्थव्यवस्था पूर्णरूपेण कृषि पर आश्रित होती हैं।औद्योगीकरण के दशकों के बाद भी कृषि क्षेत्र को अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त रहा है और इसीलिए दसवीं पंचवर्षीय योजना में इसके संदर्भ में यह कथन प्रस्तुत किया गया कि ''**कृषि विकास देश के आर्थिक विकास का केन्द्र होता है**। (Agriculrural development is Central to Economic development of the Country)

साहित्य समीक्षा–

साहित्य की समीक्षा शोध विषय का प्राथमिक आधार तथा पूर्व अध्ययनों की एक प्रभावी जांच है। यह अनुसंधान समस्या के संदर्भ में एक सैद्धान्तिक पृष्ठ भूमि, वैकल्पिक विश्लेषणात्मक उपकरण, पिछले निष्कर्ष और महत्वपूर्ण मूल्यांकन प्रदान करता है। कृषिगत उत्पादों के निर्यातों की संरचना में परिवर्तन और कृषि में लाभप्रविता के सम्बन्ध में विभिन्न प्रकार के शोध कार्य किये जा चुके हैं।प्रस्तुत शोध पत्र में कृषिगत उत्पादों के निर्यातों से सम्बन्धित कुछ महत्वपूर्ण निष्कर्षों को शामिल किया गया है–

धर्म नारायण (1965)[1] ने अपने अध्ययन में भारतीय स्वतंत्रता के पूर्व 6 प्रमुख फसलों जिसमें गेहूँ, चावल, जूट मूंगफली, गन्ना, एवं कपास के जोत क्षेत्र आवंटन तथा सापेक्ष कीमतों के मध्य सम्बन्धों का परीक्षण किया। परीक्षणोपरान्त यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि खाद्यान्न फसलों व नकदी फसलों दोनों के सम्बन्ध में जोत क्षेत्र तथा कीमतों के मध्य एक सार्थक संबंध पाया गया। किसी विशेष फसल की कीमत में वृद्धि उस फसल के उत्पादन में वृद्धि लाती है। कारण यह बताया गया कि कृषक सापेक्ष रूप में अधिक लाभ के आधार पर फसल के अधिक उत्पादन हेतु प्रेरित होते है और फसलों की कीमतों में वृद्धि उस फसल के उत्पादन से प्राप्त लाभ (कीमत लागत) को बढ़ा देती है। परन्तु साथ ही यदि समग्र कृषि उत्पादन की बात की जाय तो लाभ की संभावना के दृष्टिकोण से कृषक अधिक

[1] Naragam, Dharm: Impact of Price movement on Areas under selected crops in India 1900-1939, London Cambridge

RRIJM 2015, All Rights Reserved

कीमत वाली फसल के उत्पादन की अपेक्षा कम लागत वाली फसलों के उत्पादन को वरीयता देंगे।

आर0 थामाराजाक्षी (1969)[2] ने अपने अध्ययन में घरेलू व्यापार की शर्त का कृषि क्षेत्र, गैर कृषि क्षेत्र तथा सम्पूर्ण अर्थ व्यवस्था पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया। निष्कर्ष रूप में बताया कि प्रथम तीन पंचवर्षीय योजनावधि में कृषि क्षेत्र तथा गैर कृषि क्षेत्र दोनों में वस्तुओं के मूल्य में वृद्धि हुई थी। परन्तु कृषि वस्तुओं के मूल्य में वृद्धि की दर गैर कृषि वस्तुओं के मूल्य में बढ़ोत्तरी की दर से ज्यादा थी परिमाणः कृषि क्षेत्र को दोहरा लाभ प्राप्त हुआ। प्रथम कृषि क्षेत्र की क्रयशक्ति में वृद्धि हुई और दूसरा कृषि आयातों की लागत कृषि क्षेत्र की क्रयशक्ति क्षमता के दायरे में बनी रही।

एम. गिरिबाबू (2009)[3] ने बताया कि उदारीकरण के दौर में कृषिगत उत्पादों के निर्यातों के प्रदर्शन में कोई लाभदायक स्थिति नहीं पायी गयी है। इन्होनें अपने अध्ययन में बताया कि कृषिगत उत्पादों के निर्यातों में लगातार उतार चढ़ाव पाये गये। यद्यपि कृषिगत वस्तुओं के उत्पादन में भारत विश्व में महत्वपूर्ण स्थान रखता है परन्तु निर्यातों में इसे परिवर्तित कर पाने में सफल नहीं रहा है और यह प्रवृत्ति उदारीकरण से पूर्व और उदारीकरण के बाद दोनों अवस्थाओं में पायी गयी।

आर0वी0 धर और यू0एस0 राय (2009)[4] के अध्ययन के अनुसार जहाँ भारत के निर्यातों में विनिर्मित वस्तुओं का अंशदान बढ़ा है वहीं कृषिगत उत्पादों के निर्यातों का अंशदान कम हुआ है। कृषिगत वस्तुओं के निर्यात से मिलने वाली आय यद्यपि 1991 से 2008 के बीच बढ़ी परन्तु भारत के कुल निर्यातों में इसके हिस्से में कमीं पायी गई है। बहुत से कृषिगत उत्पादों के निर्यात जैसे चीनी कॉफी, चाय, तम्बाकू और काजू नब्बे के दशक में महत्वपूर्ण कृषिगत उत्पादों के निर्यात थे परन्तु बाद में इनके अंशदान में कमी पायी गयी।

सुरेश एण्ड माथुर (2016)[5] के अध्ययन के अनुसार भारत में कृषिगत वस्तुओं के निर्यातों में वृद्धि की प्रवृत्ति पायी गयी परन्तु कृषिगत वस्तुओं के निर्यातों में वार्षिक वृद्धि सापेक्ष रूप से कम थी जो 16 प्रतिशत पायी गयी जबकि वस्तुगत व्यापार में वृद्धि 19 प्रतिशत पायी गयी। कृषिगत निर्यातों में सबसे महत्वपूर्ण निर्यात बासमती चावल चीनी तथा मोटे अनाजों में मक्का रहा। इसके अतिरिक्त मिर्च, धनिया, मसाले महत्वपूर्ण निर्यात रहे। फलों में आम और अंगूर तथा सब्जी में प्याज और आलू सर्वाधिक महत्वपूर्ण निर्यात पाए गये।

[2] Thamarakshi, R., Intersectoral Terms of Trade and Marketed Surplus of Agricultural Produce- 151-52 to 1965-66, Economics & Political Weekly (June 28, 1969)

[3] M.Giri Babu - Economic Reforms and export performes in Indian Agricultural - Indian Economic General 2011.

[4] DHAR & RAI, 2008 - Agricultural Export of India in the New Economic Environment - Deep & Deep Publication, 2010

[5] Suresh, A. and Mathur, V.C. " Export of Agricultural Commodities from India: Performance and Prospects." India Economic Journal of Agricultural Science, 86 (7), 876-86, 2016

भारत द्वारा चीनी के निर्यात की संरचना–

यदि हम भारत द्वारा कृषिगत वस्तुओं के निर्यातों में चीनी के निर्यात को US Million $ के रूप में देखें तो वर्ष 1999–2000 में भारत द्वारा चीनी का कुल निर्यात 4.2 US Million $ था जो वर्ष 2002–03 में बढ़कर 365.5 US Million $ हो गया। पुनः वर्ष 2004–05 में कम होकर 33.3 US Million $ पाया गया जबकि वर्ष 2007–08 में यह बढ़कर 1345 US Million $ पाया गया। वर्ष 2009–10 में घटकर 23.2 US Million $ हो गया जबकि वर्ष 2011–12 में 1828.3 US Million $ पाया गया, वर्ष 2014–15 में घटकर 871.40 US Million $ हो गया जबकि वर्ष 2015–16 में 1500.80 US Million $ पाया गया। वर्ष 2018–19 में 1362.6 US Million $ चीनी का निर्यात भारत द्वारा किया गया। स्पष्ट है कि भारत द्वारा चीनी के कुल निर्यातों में लगातार उतार–चढ़ाव की प्रवृत्ति पायी गयी।

सारणी संख्या.1.

भारत के कुल कृषिगत उत्पादों के निर्यातों में चीनी के निर्यात की संरचना में परिवर्तन (प्रतिशत रूप में)

वर्ष	चीनी का निर्यात	कृषिगत निर्यात में चीनी का निर्यात
1999-2000	4.2	0.074
2000-01	94.3	1.57
2001-02	362.4	6.14
2002-03	365.5	5.44
2003-04	264.9	3.51
2004-05	33.3	0.39
2005-06	128.5	1.25
2006-07	690.7	5.44
2007-08	1,345.00	7.29
2008-09	968.8	5.51
2009-10	23.2	0.13
2010-11	1,189.20	4.91
2011-12	1,828.30	4.88
2012-13	1,575.10	3.85
2013-14	1,186.50	2.76
2014-15	871.4	2.25
2015-16	1,500.80	4.62
2016-17	1,290.70	3.87
2017-18	810.8	2.1
2018-19	1,362.60	3.51

स्रोत-CMIE Outlook Report 2019-20

RRIJM 2015, All Rights Reserved

चित्र संख्या.1

भारत के कुल कृषिगत उत्पादों के निर्यातों में चीनी के निर्यात की संरचना में परिवर्तन ,प्रतिशत रूप में

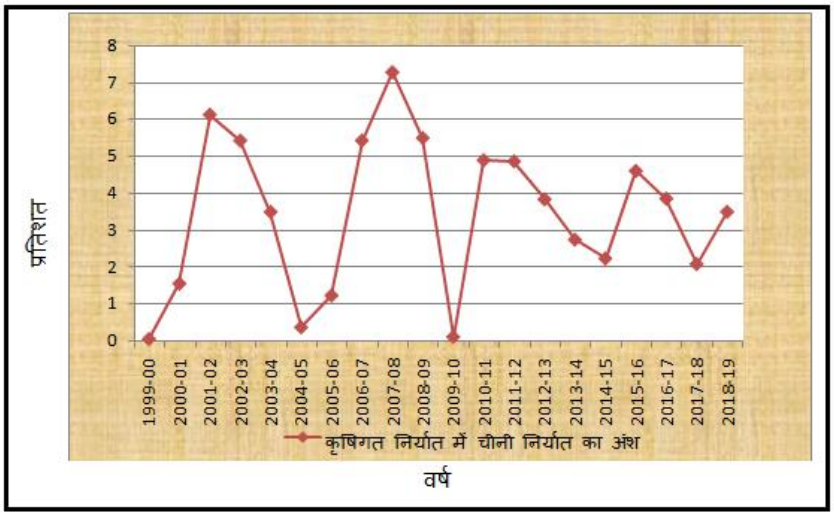

स्रोत-सारणी संख्या 23 के आधार पर निर्मित

सारणी संख्या–1 के अनुसार यदि हम भारत के कुल कृषिगत वस्तुओं के निर्यातों में चीनी के निर्यात प्रतिशत के रूप में देखें तो जहाँ वर्ष 1999–2000 में चीनी का निर्यात प्रतिशत 0.074 प्रतिशत था वही वर्ष 2001–02 में बढ़कर 6.1 प्रतिशत हो गया तथा वर्ष 2004–05 में कम होकर 0.39 प्रतिशत हो गया पुनः वर्ष 2007–08 में बढ़कर 7.29 प्रतिशत हो गया तथा वर्ष 2009–10 में कम होकर 0.13 प्रतिशत पर आ गया। पुनः वर्ष 2010–11 में बढ़कर 4.9 प्रतिशत पर आ गया तथा वर्ष 2018–19 में 3.5 प्रतिशत पाया गया। इस प्रकार भारत द्वारा चीनी के निर्यात प्रतिशत में उतार–चढ़ाव की प्रवृत्ति पायी गयी।

सारणी संख्या-2

भारत के कुल कृषिगत उत्पादों के निर्यातों में चीनी के निर्यात की दशकीय संरचना में परिवर्तन (प्रतिशत के रूप में)

वर्ष	चीनी का दशकीय निर्यात
1999-2009	3.66
2009-2019	3.28

स्रोत-सारणी संख्या 1 के आधार पर आकलित

चित्र संख्या-2

भारत के कुल कृषिगत उत्पादों के निर्यातों में चीनी के निर्यात की दशकीय संरचना में परिवर्तन (प्रतिशत के रूप में)

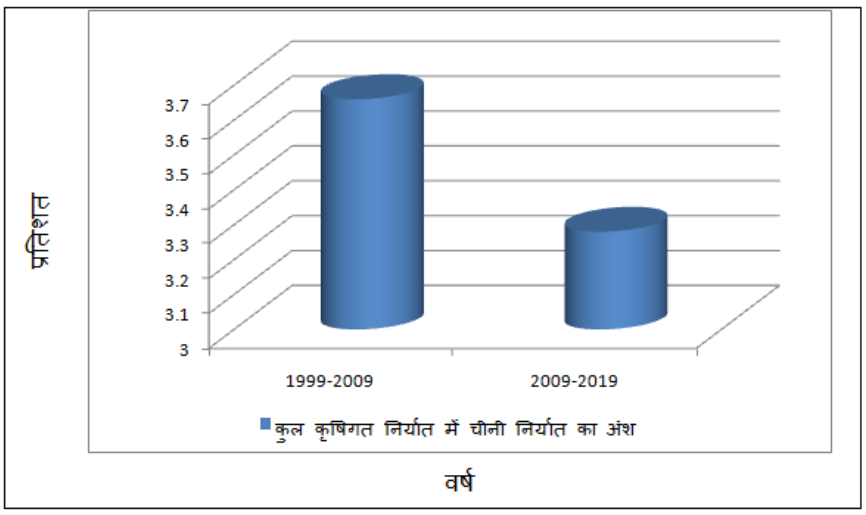

स्रोत-सारणी संख्या 2 के आधार पर निर्मित

RRIJM 2015, All Rights Reserved

यदि कुल कृषिगत निर्यातों में चीनी के निर्यात का प्रतिशत आधार पर दशकीय विश्लेषण करें तो अध्ययन की प्रथम अवधि (1999–2009) में यह कुल कृषिगत निर्यातों का 3.66 प्रतिशत था जो बाद की अवधि (2009–19) में 3.28 प्रतिशत हो गया। इस प्रकार प्रथम दशक की तुलना में दूसरे दशक में प्रतिशत के रूप में 10.3 प्रतिशत की कमी पायी गयी।

भारत द्वारा चीनी के निर्यात की दिशा में परिवर्तन का विश्लेषण

सारणी संख्या-3 भारत द्वारा चीनी के निर्यात की दिशा में परिवर्तन (प्रतिशत के रूप में)

वर्ष	विश्व	अफ्रीका	अमेरिका	यूरोप	एशिया
1999-2000	100	1.55	8.13	21.81	68.16
2000-01	100	0.24	0.91	2.04	96.76
2001-02	100	8.04	0.38	3.79	87.77
2002-03	100	7.74	1.04	2.54	86.33
2003-04	100	12.94	3.24	5.14	76.7
2004-05	100	7.36	3.42	20.37	68.46
2005-06	100	0.58	4.05	11.45	83.65
2006-07	100	7.36	0.21	1.66	90.74
2007-08	100	17.61	0.45	2.86	78.4
2008-09	100	19.42	0.18	0.86	78.59
2009-10	100	2.25	9.58	11.06	75.88
2010-11	100	15.6	1.74	0.85	81.31
2011-12	100	32.04	1.6	1.85	64.16
2012-13	100	33.98	1.29	2.06	62.63
2013-14	100	39.63	0.66	2.14	57.37
2014-15	100	49.03	1.22	2.16	46.25
2015-16	100	35.18	1.03	3.55	60.1
2016-17	100	41.41	0.74	1.95	55.79
2017-18	100	50.85	0.89	2.03	46.08
2018-19	100	47.82	1.24	2.09	48.72

स्रोत-CMIE Outlook Report 2019-20

चित्र संख्या-3 भारत द्वारा चीनी के निर्यात की दिशा में परिवर्तन (प्रतिशत के रूप में)

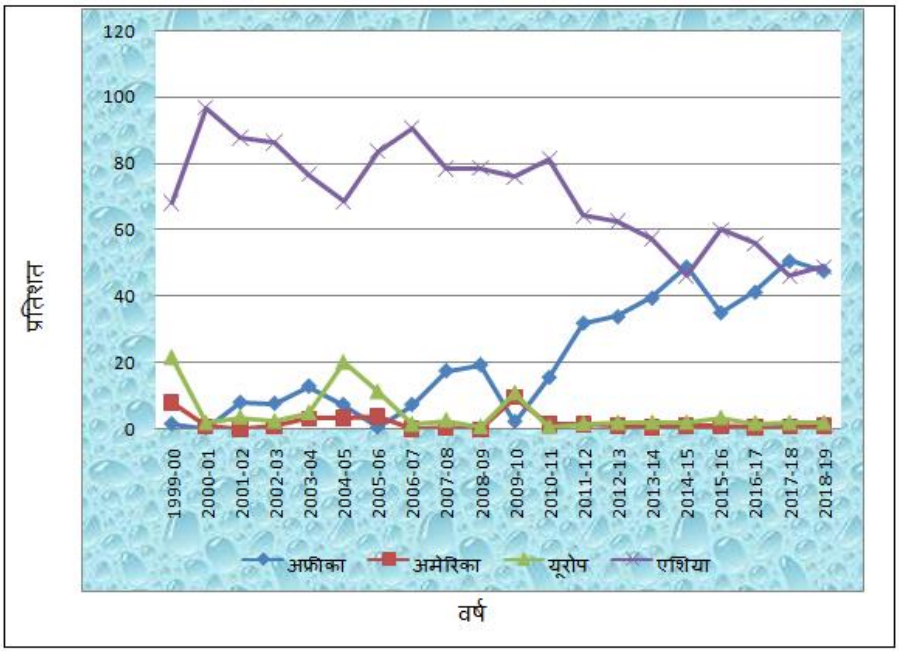

स्रोत-सारणी संख्या 3 के आधार पर निर्मित

सारणी संख्या 3 के अनुसार वर्ष 1999–2000 में भारत के कुल चीनी निर्यात में एशिया का अंशदान 68.16 प्रतिशत था जो वर्ष 2009–10 में 75.88 प्रतिशत हो गया। वर्ष 2014–15 के बाद इसमें कमी की प्रवृत्ति पायी गयी। वर्ष 2017–18 में एशियाई देशों का भारतीय चीनी निर्यात में हिस्सा लगभग 46 प्रतिशत था जो वर्ष 2018–19 में 48.7 प्रतिशत पाया गया।

भारत के चीनी निर्यात में यूरोप की हिस्सेदारी वर्ष 1999–2000 में 21.81 प्रतिशत थी जो वर्ष 2009–10 में घटकर 11.06 प्रतिशत पायी गयी बाद के वर्षों में इसमें सतत गिरावट दर्ज की गयी। वर्ष 2017–18 में भारत के चीनी निर्यात में यूरोप का हिस्सा 2.03 प्रतिशत जो वर्ष 2018–19 में 2.09 प्रतिशत पाया गया।

यदि भारत में चीनी निर्यात में अमेरिका के हिस्सेदारी का विश्लेषण करें तो वर्ष 1999–2000 में यह 8.13 प्रतिशत था जो वर्ष 2008–09 में 0.18 प्रतिशत हो गया। 2009–10 में 9. 58 प्रतिशत तथा बढ़ा पुनः वर्ष 2017–18 में घटकर 0.89 प्रतिशत पाया गया जो वर्ष 2018–19 में 1.24 प्रतिशत रहा।

यदि वर्ष 1999–2000 में भारत के चीनी निर्यात में अफ्रीकी देशों का हिस्सा 1.55 प्रतिशत था जो वर्ष 2003–04 में बढ़कर 12.94 प्रतिशत हो गया पुनः वर्ष 2009–10 में घटकर 2.25 प्रतिशत हो गया। वर्ष 2017–18 में यह 50.85 प्रतिशत तक पहुंच गया जबकि 2018–19 में यह 47.82 प्रतिशत पाया गया।

सारणी संख्या-4 भारत द्वारा चीनी के निर्यात की दिशा में दशकीय परिवर्तन

(प्रतिशत के रूप में)

वर्ष	अफ्रीका	अमेरिका	यूरोप	एशिया
1999-2009	8.28	2.2	7.25	81.55
2009-2019	34.77	1.99	2.97	59.82

स्रोत-सारणी संख्या 3 के आधार पर आकलित

चित्र संख्या–4 भारत द्वारा चीनी के निर्यात की दिशा में दशकीय परिवर्तन

(प्रतिशत के रूप में)

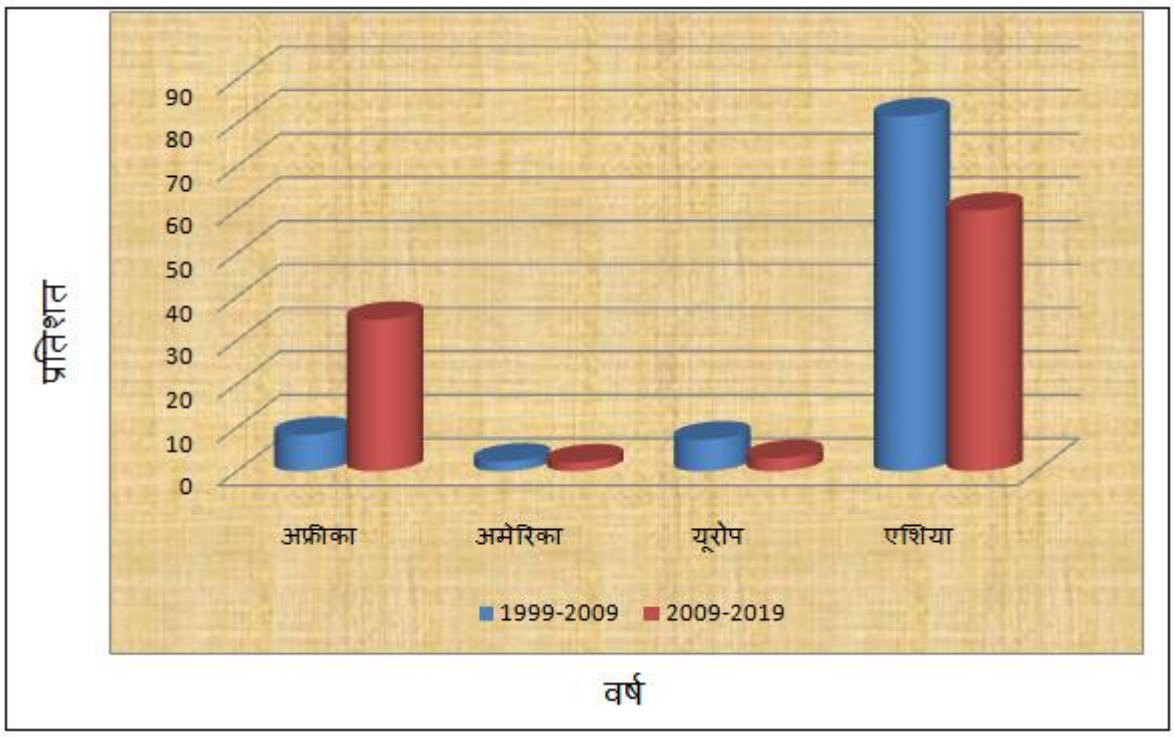

स्रोत-सारणी संख्या 4 के आधार पर निर्मित

सारणी संख्या 4 के अनुसार अध्ययन के प्रथम दशक (वर्ष 1999–2009) में जहाँ भारत के द्वारा निर्यात की गयी चीनी का औसतन 81.55 एशियाई देशों को जाता था वह अध्ययन के अगले दशक में घटकर औसतन 59.82 प्रतिशत

प्रतिवर्ष हो गया इस प्रकार विगत दशक की तुलना में वर्तमान दशक में एशियाई देशों को चीनी निर्यात में कमी आयी। इसी प्रकार पहले दशक में भारत के चीनी निर्यात में यूरोपीय देशों का हिस्सा 7.25 प्रतिशत था जो अगले दशक में घटकर 2.97 प्रतिशत हो गया जबकि अमेरिकी देशों की हिस्सेदारी जो पहले दशक में 2.2 प्रतिशत थी वह अगले दशक में घटकर 1.99 प्रतिशत हो गयी। ''इस प्रकार एशिया, यूरोप व अमेरिका तीनों ही महाद्वीपों में भारत के चीनी निर्यात में प्रतिशत के रूप में कमी पायी गयी।''

जबकि यदि भारत के चीनी निर्यात में अफ्रीकी देशों के योगदान का विश्लेषण करें तो जहां पहले दशक (वर्ष 1999–2019) में कुल चीनी निर्यात में इसका हिस्सा मात्र 8.28 प्रतिशत था। वहीं अगले दशक (वर्ष 2009–2019)में बढ़कर 34. 77 प्रतिशत हो गया।

निष्कर्ष–

- यदि कुल कृषिगत नियातों में प्रतिशत के रूप में चीनी के निर्यातों के दशकीय परिवर्तन का विश्लेषण करें तो प्रथम अवधि (वर्ष 1999–2009) में यह औसतन 3.66 प्रतिशत था जो अगली अवधि वर्ष (2009–19) में घटकर 3.28 प्रतिशत हो गया। इस प्रकार प्रतिशत के रूप में दशकीय औसत में 10.3 प्रतिशत की कमी पायी गयी।
- भारत के कुल चीनी निर्यात में एशियाई देशों का हिस्सा जो प्रथम दशक (वर्ष 1999–2009) में लगभग 81.5 प्रतिशत वार्षिक था जो दूसरे दशक (वर्ष 2009–2019) में कम होकर 59.82 प्रतिशत हो गया जब कि अफ्रीकी देशों का हिस्सा 8.2 प्रतिशत से बढ़कर 34.7 प्रतिशत हो गया। इस प्रकार एशियाई देशों को चीनी के निर्यात में दशकीय रूप में कमी की प्रवृत्ति देखी गयी जबकि अफ्रीकी देशों को चीनी के निर्यात बढ़े हैं। अमेरिका व यूरोप के देशों को भी प्रतिशत के रूप में चीनी के निर्यात में कमी की प्रवृत्ति देखी गयी है।
- चीनी उद्योग कृषि क्षेत्र पर आधारित एक महत्वपूर्ण उद्योग है। भारत चीनी का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक एवं सबसे बड़ा उपभोक्ता देश है।

सन्दर्भ सूची–

1. Mishra, S.K. and Puri, V.K. (2010- 2018) - 'Indian economy' Himalya Publication, New Delhi.
2. Datt. Rudra and Sundaram, K.P.M. (2010- 2018) - 'Indian economy' S. Chand Publication, New Delhi.
3. Naragam, Dharm: Impact of Price movement on Areas under selected crops in India 1900-1939, London Cambridge CMIE Outlook Report 2000-2019
4. Thamarakshi, R., Intersectoral Terms of Trade and Marketed Surplus of Agricultural Produce- 151-52 to 1965-66, Economics & Political Weekly (June 28, 1969)
5. DHAR & RAI, 2008 - Agricultural Export of India in the New Economic Environment - Deep & Deep Publication, 2010
6. M.Giri Babu - Economic Reforms and export performes in Indian Agricultural - Indian Economic General 2011.
7. Suresh, A. and Mathur, V.C. " Export of Agricultural Commodities from India: Performance and Prospects." India Economic Journal of Agricultural Science, 86 (7), 876-86, 2016
8. CMIE Outlook Report 2000-2019
9. भारतीय आर्थिक सर्वेक्षण 2015–16, 2016–17, 2017–18 , 2018–19
10. DHAR & RAI, 2008- Agricultural Export of India in the New Economic Environment - Deep & Deep Publication, 2010
11. इकनामिक एवं पॉलिटीकल विकली, नई दिल्ली – साप्ताहिक.
12. योजना जून 2014 अशोक गुलाटी, सुरभि जैन
13. कुरूक्षेत्र, नई दिल्ली – मासिक.
14. कृषिगत परिदृश्य, मुम्बई – अर्द्धवार्षिक.